Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# बिहार

## Ex - Cadre Assistant (Group-C)

Prelims (Screening) & Written Test

भाग - 3

**बिहार का सामान्य ज्ञान**

SIERRA INNOVATIONS

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | राज्य का परिचय | 1 |
| 2 | प्राचीन इतिहास | 5 |
| 3 | मध्यकालीन इतिहास | 15 |
| 4 | बिहार और प्रारंभिक ब्रिटिश काल | 23 |
| 5 | बिहार में उपनिवेशवाद और जनजातीय विद्रोह | 27 |
| 6 | बिहार में राष्ट्रवाद | 29 |
| 7 | बिहार की भू–आकृतिक विशेषताएँ | 38 |
| 8 | बिहार की जलवायु और मिट्टी | 49 |
| 9 | अपवाह तंत्र | 53 |
| 10 | बिहार की वनस्पति और जीव–जंतु | 62 |
| 11 | कृषि और संबद्ध क्षेत्र | 69 |
| 12 | उद्योग | 81 |
| 13 | खनिज और ऊर्जा संसाधन | 92 |
| 14 | परिवहन एवं संचार | 102 |
| 15 | जनसंख्या और अधिवास | 115 |
| 16 | बिहार राजनीतिक व्यवस्था | 122 |
| 17 | बिहार के राज्यपाल | 127 |
| 18 | बिहार के मुख्यमंत्री | 131 |
| 19 | बिहार मंत्रिपरिषद | 133 |
| 20 | बिहार न्यायपालिका | 135 |
| 21 | बिहार के संवैधानिक और गैर–संवैधानिक निकाय | 140 |
| 22 | स्थानीय स्वशासन | 142 |
| 23 | बिहार में भाषा और साहित्य | 146 |

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 24 | बिहार की कला और शिल्प | 154 |
| 25 | बिहार में संगीत और नृत्य | 161 |
| 26 | बिहार के मेले और त्योहार | 167 |
| 27 | बिहार की प्रमुख जनजातियाँ | 172 |
| 28 | बिहार में पर्यटन | 180 |
| 29 | खेल एवं संबंधित पुरस्कार | 192 |
| 30 | बिहार बजट 2026–27 | 198 |

# 1 अध्याय राज्य का परिचय

## बिहार: महत्त्वपूर्ण तथ्य

- **2 दिसंबर, 1911:** दिल्ली दरबार में एक अलग बिहार प्रांत बनाने की घोषणा की गई।
- **22 मार्च, 1912:** बिहार (ओडिशा सहित) प्रांत के गठन के लिए अधिसूचना/आधिकारिक घोषणा जारी की गई।
- **1 अप्रैल, 1912:** बिहार (ओडिशा सहित) प्रांत की औपचारिक रूप से स्थापना की गई।
- **1 अप्रैल, 1936**: बिहार और ओडिशा को दो अलग-अलग प्रांतों/राज्यों में विभाजित कर दिया गया।
- **15 नवंबर, 2000:** बिहार का अंतिम विभाजन हुआ; झारखंड एक नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आया, जिसमें बिहार का 46% भूभाग शामिल था और यह भारत का 28वां राज्य बना।
- **बिहार स्थापना दिवस:** 22 मार्च

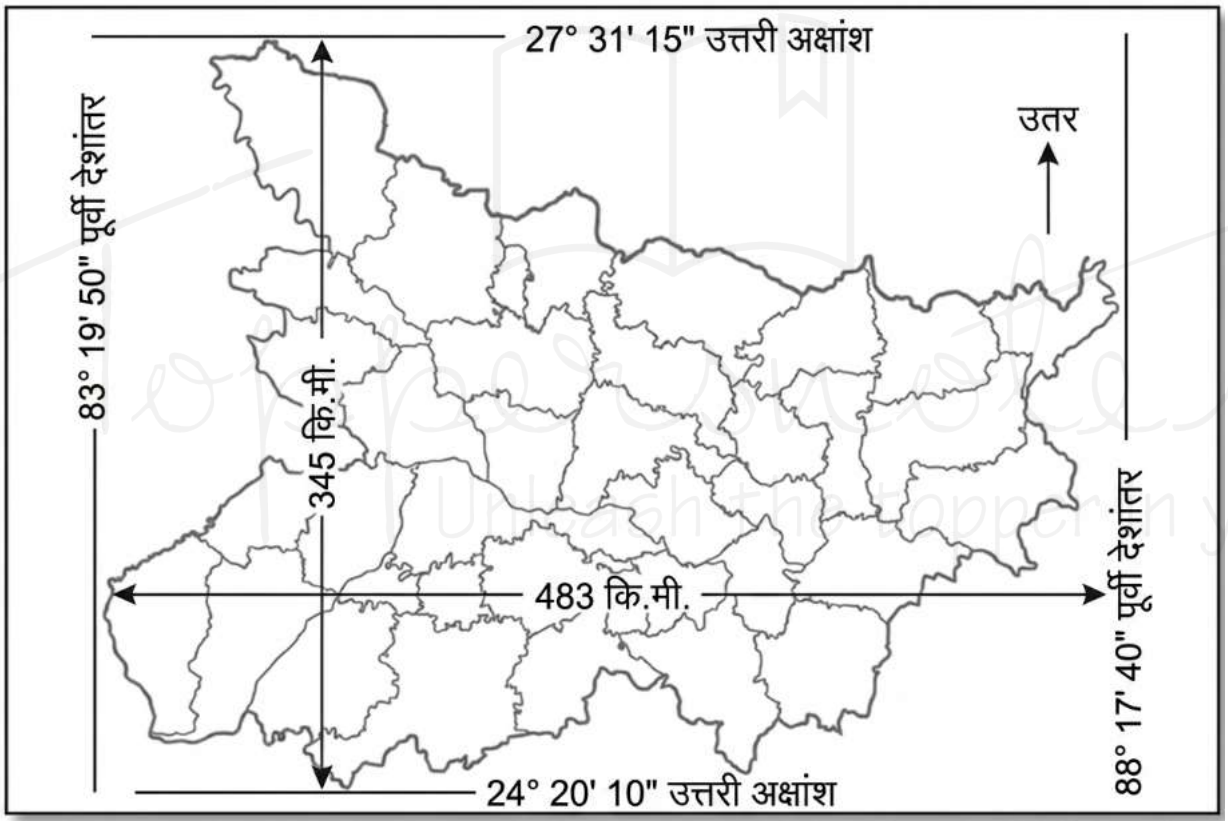


- **अक्षांश**: 24°20′10″ उत्तरी से 27°31′15″ उत्तरी
- **देशांतर:** 83°19′50″ पूर्वी से 88°17′40″ पूर्वी
- **लंबाई (उत्तर से दक्षिण):** 345 किमी
- **लंबाई (पूर्व से पश्चिम):** 483 किमी
- **कुल भौगोलिक क्षेत्रफल:** 94,163 वर्ग किमी
- **भारत के कुल क्षेत्रफल में भागीदारी:** 2.86%
- **भारत में क्षेत्रफल के आधार पर स्थान:** 12वाँ
- **राज्य की भाषा:** हिंदी
- **द्वितीय राजभाषा:** उर्दू
- **राजधानी:** पटना
- **उच्च न्यायालय:** पटना उच्च न्यायालय (1916 में स्थापित)

## प्रशासनिक प्रभाग:-

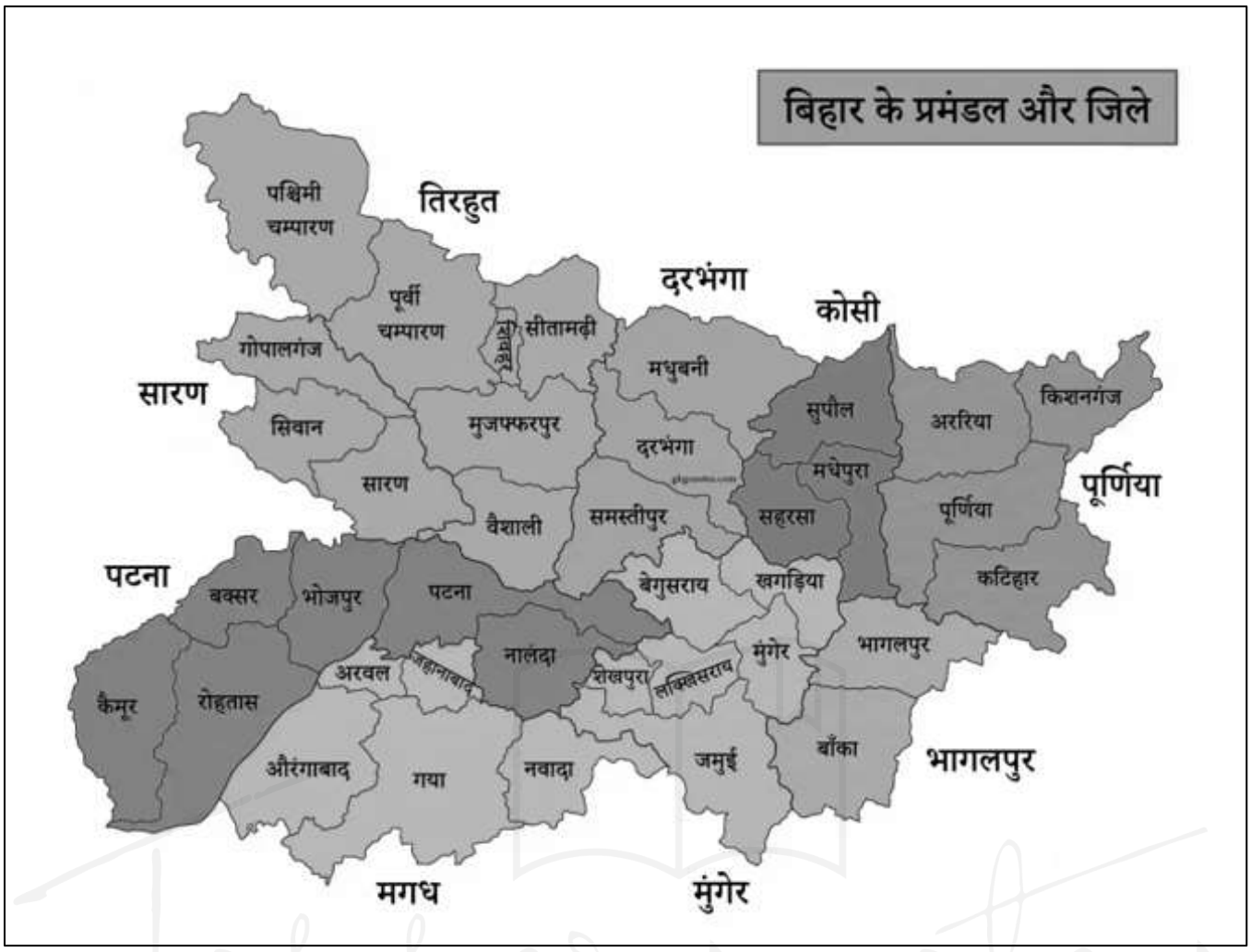


- **प्रमंडल** – 09
- **जिले** – 38 (38वाँ जिला अरवल है)
- **उप-मंडल** – 101
- **प्रखंड-सह-अंचल** – 534
- **पंचायतें** – 8067
- **नगर निगम** – 19 (19वाँ नगर निगम सहरसा है)
- **नगर पालिकाएँ** – 88
- **नगर पंचायतें** – 154

## बिहार की विधान व्यवस्था :-

- **पुलिस जिले** – 40 (38 जिलों के अतिरिक्त बगहा और नवगछिया पुलिस जिले हैं)
- **बिहार विधान सभा में सीटों की संख्या** – 243
- **विधान परिषद में सीटों की संख्या** – 75
- **लोकसभा में सीटों की संख्या** – 40
- **राज्यसभा में सीटों की संख्या** – 16
- **विधान सभा में कुल आरक्षित सीटें** – 40
  - ✓ **अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित सीटें** – 38
  - ✓ **अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित सीटें** – 02 (कटोरिया और मनिहारी)

  **लोकसभा में अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित सीटें** – 06 (गोपालगंज, हाजीपुर, समस्तीपुर, जमुई, गया और सासाराम)

Toppersnotes Unleash the topper in you

## बिहार की सीमाएँ :-

| दिशा | सीमावर्ती राज्य/देश | जिले |
|---|---|---|
| उत्तर | नेपाल | **7 जिले:** पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज |
| दक्षिण | झारखंड | **8 जिले:** रोहतास, औरंगाबाद, गया, नवादा, जमुई, बांका, भागलपुर, कटिहार |
| पूर्व | पश्चिम बंगाल | **3 जिले:** किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार |
| पश्चिम | उत्तर प्रदेश | **8 जिले:** रोहतास, कैमूर, बक्सर, भोजपुर, सारण, सिवान, गोपालगंज, पश्चिम चंपारण |

**मुख्य बिंदु :**

- **अन्य जिले:** बिहार में **15 ऐसे जिले** हैं जिनकी सीमा किसी अन्य राज्य या देश से नहीं लगती है, जिनमें **दरभंगा, समस्तीपुर, वैशाली, शिवहर, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा, बेगूसराय, मुंगेर, लखीसराय, शेखपुरा, नालंदा, जहानाबाद, अरवल और पटना** शामिल हैं।

## भौगोलिक जानकारी :-

- यह पूर्णतः **उत्तरी गोलार्ध में तथा कर्क रेखा के उत्तर** में स्थित है।
- **समुद्र तल से औसत ऊँचाई**: 53 मीटर (173 फीट)
- **भौगोलिक स्थिति:** भारत के पूर्वी भाग में
- **जलवायु:** उष्णकटिबंधीय मानसूनी
- **औसत वार्षिक वर्षा**: 100–200 सेमी (लगभग 112 सेमी)
- **सर्वाधिक वर्षा वाला जिला:** किशनगंज
- **न्यूनतम वर्षा वाला जिला:** औरंगाबाद
- **बिहार में प्रमुख वन प्रकार:** पर्णपाती वन
- **सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र वाला जिला:** शेखपुरा (82%)
- **न्यूनतम सिंचित क्षेत्र वाला जिला:** जमुई (16%)

# बिहार: राज्य चिह्न

## राज्य प्रतीक: बोधि वृक्ष

- इसे 1912 (बिहार के एक पृथक प्रांत के रूप में गठन के साथ) में अपनाया गया।
- बिहार के राज्य चिन्ह में **बोधि वृक्ष के दोनों ओर दो स्वस्तिक** बने होते हैं।
- यह **बिहार सरकार का आधिकारिक प्रतीक चिन्ह** है।

## राजकीय वृक्ष – पीपल (फाइकस रिलिजियोसा)

- इसे 1989 में अपनाया गया।
- पीपल **बिहार का राजकीय वृक्ष** है और यह **भारतीय उपमहाद्वीप** में व्यापक रूप से पाया जाता है।

- इसे **हिंदू, जैन और बौद्ध धर्म में पवित्र** माना जाता है।
- **गौतम बुद्ध ने बिहार के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान (बोधि)** प्राप्त किया था।
- पेड़ के कई हिस्से **औषधीय रूप से उपयोगी** होते हैं, और इसके फलों का उपयोग **हृदय संबंधी रोगों** के इलाज में किया जाता है।

## राजकीय पुष्प – गेंदा (टैगेट्स इरेक्टा)

- राज्य पुष्प के रूप में इसकी घोषणा 1989 में की गई।
- गेंदा मुख्य रूप से **उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु** में उगता है।

- यह प्राकृतिक रूप से **सुनहरे, नारंगी और पीले रंगों** में पाया जाता है।
- इस फूल का व्यापक रूप से **सजावट और धार्मिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग किया जाता है।

## राजकीय पक्षी – गौरैया (पासर डोमेस्टिकस)

- इसे 2012 में राजकीय पक्षी के रूप में अपनाया गया।
- यह **छोटी पूंछ वाला एक छोटा भूरा-स्लेटी रंग का पक्षी** है।
- **गौरैया इमारतों, घरों और पेड़ों में अपना घोंसला बनाती** हैं।
- वे मुख्य रूप से **बीज खाते** हैं, लेकिन **छोटे कीटों** का भी सेवन करते हैं।

## राजकीय पशु – बैल (बॉस टॉरस)

- इसे 1970 में राजकीय पशु का दर्जा दिया।
- बैलों का उपयोग पारंपरिक रूप से **जुताई, परिवहन, अनाज की थ्रेसिंग और सिंचाई गतिविधियों** के लिए किया जाता है।

- वे **बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा** रहे हैं।

Unleash the topper in you

# 2 अध्याय

# प्राचीन इतिहास

**'बिहार'** शब्द **'विहार'** शब्द से बना है, जिसका अर्थ **प्राचीन काल में बौद्ध भिक्षुओं के विश्राम स्थल होता था। पुराणों और महाकाव्यों** में भी **'विहार'** नाम का उल्लेख मिलता है। **12वीं शताब्दी** के दौरान, मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इस क्षेत्र को **'बिहार'** कहना शुरू कर दिया था। **बिहार** का क्षेत्र **पूर्व-वैदिक काल से ही बसा हुआ** है और पु**रातात्विक साक्ष्य इसके समृद्ध और प्राचीन इतिहास को प्रकट करते हैं।**

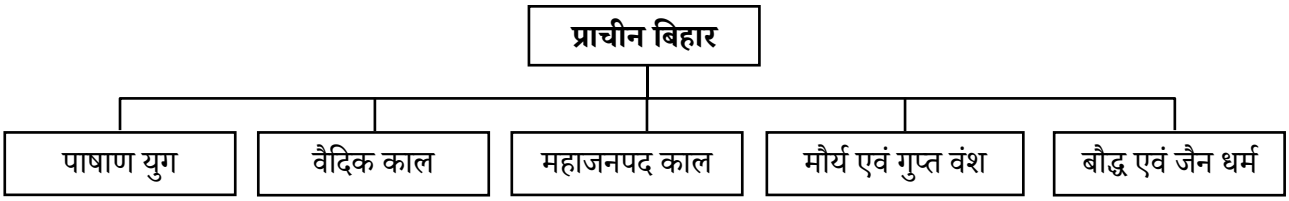


## बिहार के प्राचीन इतिहास के स्रोत

बिहार के प्राचीन इतिहास का पुनर्निर्माण **पुरातात्विक साक्ष्यों, साहित्यिक स्रोतों और विदेशी यात्रियों के विवरणों** के माध्यम से किया गया है।

### पुरातात्विक साक्ष्य

- **नालंदा, सारण, मुंगेर और वैशाली बिहार के प्रागैतिहासिक चरण से संबंधित महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल** हैं।
- **कुम्हरार (पटना)** में **मौर्य काल (321-185 ईसा पूर्व)** के पुरातात्विक अवशेष मिले हैं, जिनमें **अस्सी स्तंभों वाले हॉल** के खंडहर भी शामिल हैं।
- **बुलंदी बाग** के पास **उत्खनन 1912-13 में डेविड ब्रेनार्ड स्पूनर** द्वारा किया गया था।
- वहां खोजे गए स्तंभ चुनार के **महीन बलुआ पत्थर** से बने थे और एक **लकड़ी की छत** को सहारा देते थे।
- **सम्राट अशोक के पॉलिश किए हुए स्तंभ वैशाली, लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा** में खोजे गए हैं।
- **चिरांद** में **कुषाण काल** की **स्मारकीय इमारतों** के अवशेष मिले हैं।
- **बक्सर और पटना** में **टेराकोटा की मानव मूर्तियाँ** खोजी गई हैं।
- **नालंदा और विक्रमशिला** में उत्खनन से गुप्त और पाल काल के **स्तूप, मंदिर और विहार जैसी बौद्ध संरचनाओं** का पता चलता है।
- **पाल-सेन कला शैली गया, नालंदा और नवादा** में फली-फूली।

### अभिलेख:

- **बिहार के सबसे पुराने अभिलेख अशोक के काल** के हैं, जो **ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा** में लिखे गए हैं।
- अशोक के स्तंभ लेख **लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा** में पाए गए हैं।
- **बराबर गुफा अभिलेख (गया)** और **दशरथ का नागार्जुनी पहाड़ी अभिलेख आजीवकों** के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- **नालंदा, मुंगेर, भागलपुर और बाणगढ़ के ताम्रपत्र अभिलेख पाल शासकों** जैसे **धर्मपाल, देवपाल, नारायणपाल और विग्रहपाल** से संबंधित हैं।
- ये अभिलेख **पाल काल की सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक स्थितियों** के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- महत्वपूर्ण अभिलेखों में समुद्रगुप्त का **पंचोभ ताम्रपत्र (भागलपुर), जानीबिघा अभिलेख (गया) और देवपाड़ा अभिलेख** शामिल हैं।

## बिहार में प्राचीन पुरातात्विक स्थल/अभिलेख/अवशेष

| पुरातात्त्विक स्थल / अवशेष | स्थान | जिला | उत्खननकर्ता / पुरातत्वविद् |
|---|---|---|---|
| अशोक स्तंभ लेख | लौरिया अरेराज | पूर्वी चंपारण | अलेक्जेंडर कनिंघम |
| अशोक स्तंभ लेख एवं समाधि टीले | लौरिया नंदनगढ़ | पश्चिम चंपारण | अलेक्जेंडर कनिंघम |
| प्राचीन टीले (हसरा कोल, सोभनाथ) | बिशुनपुर टंडवा | गया | बी. पी. सिन्हा |
| विक्रमशिला मठ | अंटीचक | भागलपुर | बी. पी. सिन्हा |
| प्राचीन टीले, संरचनाएँ, बुद्ध प्रतिमा | बड़गांव जगदीशपुर | नालंदा | ए. घोष |
| प्राचीन टीला, ईंट का कुंड | मनेर | पटना | डी. बी. स्पूनर |
| बौद्ध मूर्तियाँ | गुनेरी | गया | बी. पी. सिन्हा |
| पाँच स्तूप, मौर्यकालीन दीवार | पहाड़ी दिघ, सैंडलपुर | पटना | डी. बी. स्पूनर |
| बराबर एवं नागार्जुनी गुफाएँ | मखदुमपुर क्षेत्र | जहानाबाद | अलेक्जेंडर कनिंघम |
| अवशेष स्तूप | हरपुर बसंत | वैशाली | ए. एस. अल्टेकर |
| नंदनगढ़ में स्तूप एवं किला | मरहिया | पश्चिम चंपारण | अलेक्जेंडर कनिंघम |
| स्तूप एवं किले के अवशेष | सागर दिघ, ताजपुर | पूर्वी चंपारण | अलेक्जेंडर कनिंघम |
| हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ (कौवाडोल पहाड़ी) | कुरिसराय | गया | बी. पी. सिन्हा |
| स्तूप, टीला, अशोक का महल | कुम्हरार | पटना | डी. बी. स्पूनर |
| अशोक स्तंभ | कोल्हुआ | मुजफ्फरपुर | अलेक्जेंडर कनिंघम |

## सिक्के

- **पटना और पूर्णिया में चांदी के आहत सिक्के** (पंच-मार्क सिक्के) पाए गए थे।
- **बक्सर और चिरांद में कुषाण काल के तांबे के सिक्के** पाए गए थे।
- **हाजीपुर में गुप्त काल के सिक्के** खोजे गए हैं।

## साहित्यिक स्रोत

- **वैदिक साहित्य :**
  - ✓ **ऋग्वेद** में, बिहार को **'कीकट'** कहा गया है और यहाँ के लोगों को **'व्रात्य'** के रूप में जाना जाता था, जिन्हें **मगध का पूर्वज** माना जाता था।
  - ✓ **अथर्ववेद और पंचविंश ब्राह्मण** में **मगध** के प्रारंभिक संदर्भ मिलते हैं।
  - ✓ **उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)** के दौरान, आर्य बिहार सहित **पूर्वी भारत** की ओर बढ़े।
  - ✓ **शतपथ ब्राह्मण** में **उत्तर बिहार** में आर्य संस्कृति के प्रसार का उल्लेख है, जिससे गंगा के पास **विदेह राज्य** का गठन हुआ।
- **पुराण**
  - ✓ **विष्णु पुराण, वायु पुराण और मत्स्य पुराण** में बिहार के संदर्भ मिलते हैं।
  - ✓ **विष्णु पुराण** में **मौर्य वंश** का उल्लेख है, **वायु पुराण** में **गुप्त वंश** का संदर्भ मिलता है और **मत्स्य पुराण में शुंग वंश** का वर्णन किया गया है।
  - ✓ **वराह पुराण** में **'कीकट'** को एक अशुभ स्थान बताया गया है, जबकि **गया, पुनपुन और राजगीर** का उल्लेख शुभ स्थानों के रूप में किया गया है।
- **महाकाव्य**
  - ✓ **रामायण और महाभारत** में बिहार से संबंधित महत्वपूर्ण संदर्भ मिलते हैं।
  - ✓ **रामायण** में **विदेह राज्य** का उल्लेख है, जबकि **महाभारत में अंग** का संदर्भ मिलता है।
  - ✓ महाभारत के एक प्रमुख पात्र **कर्ण** ने **अंग** पर शासन किया था, जिसमें वर्तमान **भागलपुर और मुंगेर** शामिल थे।

- **बौद्ध साहित्य**
  - ✓ बौद्ध साहित्य **छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर मौर्य काल तक** के बिहार के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
  - ✓ महत्वपूर्ण ग्रंथों में **अंगुत्तर निकाय, दीघ निकाय, विनयपिटक और दिव्यावदान** शामिल हैं।
  - ✓ **अंगुत्तर निकाय** में **सोलह महाजनपदों** का उल्लेख है, जिनमें से कई बिहार में स्थित थे।
  - ✓ अधिकांश बौद्ध ग्रंथ **पाली भाषा** में लिखे गए थे।
  - ✓ **विनयपिटक मगध राजशाही और वैशाली गणराज्य** के इतिहास का वर्णन करता है।
  - ✓ **दीपवंश और महावंश** मगध के **पूर्व-मौर्य राजाओं की वंशावली और कालक्रम** प्रदान करते हैं।
  - ✓ **दिव्यावदान और अशोकवदान** सम्राट **अशोक के इतिहास और जीवन** का वर्णन करते हैं।
  - ✓ **आर्यमंजुश्रीमूलकल्प गुप्त काल के दौरान बिहार** के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- **जैन साहित्य**
  - ✓ बिहार का वर्णन करने वाले महत्वपूर्ण जैन ग्रंथों में **थेरावली और भगवती सूत्र** शामिल हैं।
  - ✓ **कल्पसूत्र** का एक हिस्सा, **थेरावली**, उन स्थानों का उल्लेख करता है जहाँ **महावीर** स्वामी ने भ्रमण किया था।
  - ✓ **कल्पसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र पुष्यमित्र शुंग** के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
  - ✓ **भगवती सूत्र** में **वैशाली के लिच्छवी गणराज्य** के संदर्भ मिलते हैं।
  - ✓ **कल्पसूत्र और परिशिष्टपर्वन चंद्रगुप्त मौर्य** के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- **धर्मनिरपेक्ष (गैर-धार्मिक) साहित्यिक स्रोत**
  - ✓ बिहार का वर्णन करने वाले धर्मनिरपेक्ष ग्रंथों में **अर्थशास्त्र, मुद्राराक्षस, मालविकाग्निमित्रम्, कथासरित्सागर, गार्गी संहिता, मनुस्मृति और सी-यू-की** शामिल हैं।
  - ✓ **'अर्थशास्त्र' पाटलिपुत्र के मौर्यकालीन प्रशासन** की व्याख्या करता है।

## प्राचीन बिहार के महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत :-

| साहित्यिक स्रोत | विषय | लेखक |
|---|---|---|
| अर्थशास्त्र | मौर्य प्रशासन, अर्थव्यवस्था, विदेश नीति | चाणक्य |
| इंडिका | पाटलिपुत्र में प्रशासन | मेगस्थनीज |
| मुद्राराक्षस | धनानंद और चंद्रगुप्त मौर्य का संघर्ष | विशालकवि |
| अथर्ववेद | हिंदुस्तान, अंग और मगध का वर्णन | ऋषि अथर्वा और अंगिरस |
| गर्गी संहिता | यवनों का आक्रमण | कात्यायन |
| सी-यू-की | नालंदा विश्वविद्यालय का वर्णन | ह्वेनत्सांग |
| मनुस्मृति | धर्मशास्त्र और बिहार का इतिहास | मनु (स्वयंभू) |

## यात्रियों के विवरण

- **मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य (302-288 ईसा पूर्व)** के शासनकाल के दौरान भारत आया था और उसने अपनी पुस्तक **'इंडिका'** में **पाटलिपुत्र के मौर्यकालीन प्रशासन** का वर्णन किया है।
- **फाह्यान** ने **चंद्रगुप्त द्वितीय** के शासनकाल के दौरान **399-412 ईस्वी** के बीच भारत की यात्रा की और मगध साम्राज्य तथा **पाटलिपुत्र** का वर्णन किया।
- **ह्वेन**त्सांग **(ज़ुआनज़ैंग)** ने हर्ष के शासनकाल **(637-644 ईस्वी)** के दौरान भारत की यात्रा की और **नालंदा विश्वविद्यालय** का विस्तृत विवरण दिया, जहाँ वह **लगभग 5 वर्षों** तक रहा था।
- **इत्सिंग**, एक चीनी बौद्ध भिक्षु, गुप्त शासन के दौरान **671-695 ईस्वी के बीच भारत आया** और लगभग **11 वर्षों तक नालंदा विश्वविद्यालय** में रहा।

# बिहार का प्राचीन इतिहास

- बिहार के **प्राचीन इतिहास** में **प्रागैतिहासिक काल, वैदिक काल और बाद के ऐतिहासिक घटनाक्रम** शामिल हैं।

## बिहार का प्रागैतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक काल** को **पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण काल** में विभाजित किया गया है।
- बिहार में **पुरापाषाण युग** के साक्ष्य मिले हैं।
- बिहार में **मानवीय गतिविधि का सबसे पुराना प्रमाण मुंगेर में खोजे गए मध्यपाषाण कालीन निवास** के अवशेष हैं।

### मध्यपाषाण युग (12000–6000 ईसा पूर्व)

- मध्यपाषाण काल की कलाकृतियां **मुंगेर, हजारीबाग, रांची, सिंहभूम और संथाल परगना** में मिली हैं।
- इस काल के साक्ष्य मुख्य रूप से **मुंगेर और नालंदा** में पाए जाते हैं।
- **मुंगेर के पैसरा में कुल्हाड़ी और क्लीवर जैसे पत्थर के औजार** खोजे गए थे।
- **नवादा, कैमूर और जमुई** की पहाड़ियों में शिकार, नृत्य, दौड़ने और प्रकृति को दर्शाने वाले **शैल चित्र (रॉक पेंटिंग्स)** पाए जाते हैं।

### नवपाषाण युग (2500–1345 ईसा पूर्व)

- नवपाषाण काल के अवशेष **सारण (चिरांद) और चेचर (वैशाली)** में खोजे गए हैं।
- **चिरांद नवपाषाण कालीन अस्थि** -औजारों के लिए प्रसिद्ध है।
- **चिरांद, तरडीह, सेनुआरी और मनेर में काले और लाल मृदभांड**, गेरुए रंग के **चित्रित मृदभांड और पॉलिश किये हुए मृदभांड** पाए गए हैं।

### ताम्रपाषाण युग (2000–700 ईसा पूर्व)

- **बिहार के मध्य गंगा के मैदानों** में ताम्रपाषाण कालीन कलाकृतियां मिली हैं।
- महत्वपूर्ण स्थलों में **चिरांद (सारण), मनेर (पटना), ओप और चम्पा (भागलपुर), चेचर-कुतुबपुर (वैशाली), सोनपुर और तरडीह (गया)** शामिल हैं।
- इस काल के दौरान **काले और लाल मृदभांड और तांबे की वस्तुएं** आम थी।

## बिहार में वैदिक और उत्तर वैदिक काल

- वैदिक साहित्य और **रामायण** के अनुसार, बिहार **विदेह साम्राज्य** का हिस्सा था, जिस पर **जनक** राजवंश का शासन था और इसकी **राजधानी मिथिला** थी।
- **उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व)** के दौरान, आर्य **बिहार सहित पूर्वी भारत** की ओर बढ़े।
- **शतपथ ब्राह्मण** इस क्षेत्र में आर्यों के प्रसार का वर्णन करता है।
- **वराह पुराण** में **'कीकट' को एक अशुभ स्थान** बताया गया है, जबकि **गया, पुनपुन और राजगीर** का उल्लेख शुभ स्थानों के रूप में किया गया है।
- उत्तर वैदिक काल में, **जनपदों और गणराज्यों** का उदय हुआ जो बाद में **महाजनपदों** के रूप में विकसित हुए।

## छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बिहार – महाजनपद

- **बौद्ध और जैन साहित्य के अनुसार, 500 ईसा पूर्व** तक उत्तरी **भारत में 16 महाजनपद** (बड़े राज्य या गणराज्य) थे।
- ये वर्तमान **अफगानिस्तान से लेकर बंगाल और महाराष्ट्र** तक **भारत-गंगा के मैदानों** में फैले हुए थे।
- **सोलह महाजनपद थे: काशी, कोसल, अंग, मगध, वृज्जी (वज्जी), मल्ल, चेदि, वत्स (वंसा), कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अस्सक/अश्मक, अवंती, गांधार और कंबोज।**
- **500-400 ईसा पूर्व तक**, सोलह महाजनपदों में से कई घटकर चार शक्तिशाली राज्यों—**वत्स, अवंती, कोसल और मगध** में सिमट गए थे। **सोलह महाजनपदों में से तीन वर्तमान बिहार** में स्थित थे: **अंग, वज्जी और मगध**।

### अंग

- इसका सर्वप्रथम उल्लेख **अथर्ववेद** में मिलता है और यह मगध के पूर्व में स्थित था जिसमें वर्तमान **भागलपुर, मुंगेर और खगड़िया** शामिल थे। इसकी राजधानी **चम्पा (आधुनिक भागलपुर)** थी। महाभारत में अंग का संबंध **कर्ण** से है। अंग का अंतिम राजा **ब्रह्मदत्त** था, जिसे **मगध के बिंबिसार** ने पराजित किया था, जिसके बाद अंग का मगध में विलय कर दिया गया।

## वज्जी (वृज्जी)

- इस संघ में कई कुल शामिल थे और यह **उत्तर बिहार** में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र था, जिसकी राजधानी **वैशाली** थी। इसमें वर्तमान **चंपारण, सारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी और दरभंगा** शामिल थे। **वज्जी संघ का मुख्य केंद्र वैशाली,** निर्वाचित सभा के साथ विश्व का **प्रथम गणराज्य** माना जाता है। यह कुण्डग्राम में भगवान **महावीर** का जन्मस्थान भी था और बाद में मगध के अजातशत्रु द्वारा इसे जीत लिया गया था।
- **विदेह (मिथिला)** का प्राचीन साम्राज्य **उत्तर बिहार में गंगा के उत्तर और नेपाल के तराई क्षेत्र** के कुछ हिस्सों में स्थित था। इसका उल्लेख **रामायण और महाभारत** में मिलता है। इस साम्राज्य की स्थापना **निमि विदेह** ने की थी और इसकी राजधानी **मिथिला (जनकपुर)** थी। विदेह के राजाओं को **जनक** के नाम से जाना जाता था और राजा जनक की **पुत्री देवी सीता** इसी साम्राज्य की थी।
- **वैशाली** के **कुण्डग्राम** का **ज्ञातृक कुल**, जो **वज्जी संघ** का एक कुल था, इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि **भगवान महावीर इसी कुल से संबंधित** थे।

## मगध

- इसका सर्वप्रथम उल्लेख **अथर्ववेद** में मिलता है, जो बाद में प्राचीन भारत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बना। इसकी प्रारंभिक राजधानी **गिरिव्रज (राजगीर)** थी, जिसे बाद में **पाटलिपुत्र** स्थानांतरित कर दिया गया। इस साम्राज्य का व्यापक विस्तार हुआ और अंततः इसने अन्य महाजनपदों को अपने में समाहित कर लिया। बाद में महान **मौर्य और गुप्त साम्राज्य** मगध से ही उभरे। मल्ल एक अन्य महाजनपद था जो उत्तर मगध में स्थित था, जिसका **पावा** एक महत्वपूर्ण शहर था। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भगवान महावीर ने पावा में निर्वाण प्राप्त किया था।

# बौद्ध और जैन धर्म का उदय

**छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में दो प्रमुख धर्मों, बौद्ध और जैन धर्म**, का उदय हुआ और **बिहार उनके विकास का मुख्य केंद्र** बना।

## बौद्ध धर्म

- **गौतम बुद्ध** का जन्म **563 ईसा पूर्व में लुम्बिनी** में **शाक्य** कुल में हुआ था।
- उनके पिता **शुद्धोधन और माता महामाया** थी।
- **29 वर्ष की आयु** में, उन्होंने सत्य की खोज में घर छोड़ दिया (**महाभिनिष्क्रमण**) और वर्षों के ध्यान के बाद 528 ईसा पूर्व में **बोधगया** में पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान प्राप्त किया।
- **ज्ञान प्राप्ति** के बाद, उन्होंने **अपना पहला उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) सारनाथ** में दिया और अपना **अंतिम उपदेश वैशाली** में दिया। बुद्ध ने कुशीनगर में **महापरिनिर्वाण** प्राप्त किया।
- प्रसिद्ध **बौद्ध भिक्षु सारिपुत्र** का जन्म नालंदा में हुआ था।
- **चार बौद्ध संगीतियों** में से, **प्रथम संगीति (483 ईसा पूर्व) राजगीर में, दूसरी संगीति (383 ईसा पूर्व) वैशाली में, और तीसरी संगीति (250 ईसा पूर्व) अशोक के संरक्षण** में **पाटलिपुत्र** में आयोजित की गई थी।
- बुद्ध की शिक्षाओं को बाद में **त्रिपिटक** में संकलित किया गया: **विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्मपिटक।**

## जैन धर्म

- **24वें तीर्थंकर, महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व** में **वैशाली के पास कुण्डग्राम** में **ज्ञातृक** कुल में हुआ था।
- उनके **पिता सिद्धार्थ और माता त्रिशला** थी, जो एक लिच्छवी राजकुमारी थी।
- उन्होंने **30 वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन त्याग** दिया और **42 वर्ष की आयु में कैवल्य ज्ञान** प्राप्त किया, जिसके बाद वे **महावीर या जिन कहलाए।**
- उन्होंने अपना **पहला उपदेश विपुलाचल/विपुल गिरि (राजगीर)** में दिया और **468 ईसा पूर्व में राजगीर के पास पावापुरी में निर्वाण** प्राप्त किया।
- **जैन धर्म का मुख्य लक्ष्य मोक्ष** प्राप्त करना है, जो **तीन रत्नों (त्रिरत्न)** के माध्यम से प्राप्त होता है: **सम्यक दर्शन (सही विश्वास), सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान) और सम्यक आचरण (सही चरित्र)**।
- शिक्षाओं को संरक्षित करने के लिए जैन संगीतियाँ भी आयोजित की गई जिनमें **पहली जैन संगीति तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में और दूसरी संगीति 5वीं शताब्दी ईस्वी में वल्लभी में।**

# मौर्यपूर्व काल में बिहार

## मगध साम्राज्य

- **हर्यक वंश (684-413 ईसा पूर्व)**
  - ✓ बिम्बिसार
  - ✓ अजातशत्रु
- **नंद वंश (424-321 ईसा पूर्व)**
  - ✓ महापद्मनंद
  - ✓ धनानंद
  - ✓ अलेक्जेंडर का आक्रमण
- **मौर्य साम्राज्य (321-185 ईसा पूर्व)**
  - ✓ मौर्य साम्राज्य (321-185 ईसा पूर्व)
  - ✓ चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त) और चंद्रगुप्त मौर्य सम्राट अशोक (234-198 ईसा पूर्व)

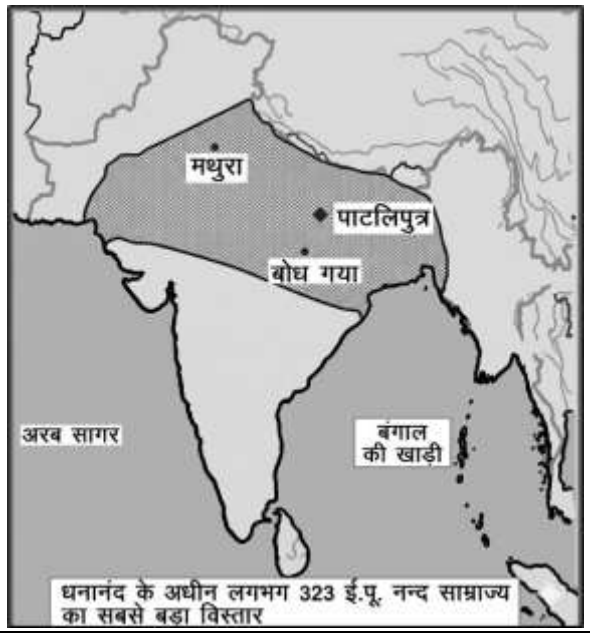


## बृहद्रथ राजवंश

- **बृहद्रथ राजवंश छठी शताब्दी ईसा पूर्व** में मगध का सबसे प्राचीन सत्तारूढ़ राजवंश था।
- **बृहद्रथ** इसके संस्थापक थे, और सबसे प्रसिद्ध शासक **जरासंध** था।
- इसकी राजधानी **गिरिव्रज (राजगीर)** थी।
- परंपरा के अनुसार, **जरासंध का वध भीम** द्वारा किया गया था।
- अंतिम शासक **रिपुंजय** था, जिसके बाद **प्रद्योत राजवंश ने सत्ता** संभाली।

## हर्यक राजवंश

- इसकी स्थापना **बिंबिसार (544–492 ईसा पूर्व)** द्वारा की गई थी और इसकी राजधानी **राजगीर** थी।
- उसने **वैवाहिक संबंधों और विजय के माध्यम से मगध** का विस्तार किया।
- उसके पुत्र **अजातशत्रु (492–460 ईसा पूर्व) ने कोसल और वैशाली** को हराया और साम्राज्य का विस्तार किया।
- उसी के शासनकाल के **दौरान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण और महावीर ने निर्वाण** प्राप्त किया था।
- इसी अवधि के दौरान **राजगीर** में **प्रथम बौद्ध संगीति** आयोजित की गई थी।
- **अजातशत्रु के उत्तराधिकारी उदयन** ने **पाटलिपुत्र** की **स्थापना की और इसे अपनी राजधानी** बनाया।

## शिशुनाग राजवंश

- **शिशुनाग (412–394 ईसा पूर्व)** ने इस राजवंश की स्थापना की।
- **मगध की दो राजधानियाँ** थी: **राजगीर और वैशाली।**
- शिशुनाग ने **अवंती** को हराया, जिससे दोनों राज्यों के बीच चल रही प्रतिद्वंद्विता समाप्त हो गई।
- उसके उत्तराधिकारी **कालाशोक** ने राजधानी को **पाटलिपुत्र** स्थानांतरित कर दिया।
- उसके शासनकाल के दौरान वैशाली में **द्वितीय बौद्ध संगीति (383 ईसा पूर्व)** आयोजित की गई थी।

## नंद राजवंश

- **शिशुनागों को अपदस्थ** करने के बाद **महापद्मनंद (344–321 ईसा पूर्व)** द्वारा इस राजवंश की स्थापना की गई थी।
- उसने मगध में एक **शक्तिशाली और समृद्ध** साम्राज्य का निर्माण किया।
- अंतिम शासक **धनानंद** था, **जिसे चंद्रगुप्त मौर्य** ने पराजित किया था।

## क्या आप भारत पर सिकंदर के आक्रमण के बारे में जानते हैं?

- सिकंदर महान ने 327 से 325 ईसा पूर्व के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप पर आक्रमण किया, सिंधु नदी को पार किया और पंजाब क्षेत्र तक पहुँच गया।
- उसने 326 ईसा पूर्व में झेलम नदी के तट पर **हाइडेस्पीज के युद्ध** में राजा पोरस को हराया।
- तक्षशिला के राजकुमार आम्भी ने सिकंदर का स्वागत और समर्थन किया।
- इस आक्रमण ने प्राचीन यूरोप और भारत के बीच पहला सीधा संबंध स्थापित किया, जिससे नए व्यापारिक मार्ग खुल गए।

# मौर्य काल के दौरान बिहार

## चंद्रगुप्त मौर्य (321–298 ईसा पूर्व)

- उन्होंने **चाणक्य (कौटिल्य)** की सहायता से **मौर्य वंश** की स्थापना की थी।
- उन्होंने **धनानंद को पराजित** किया और **मौर्य साम्राज्य की स्थापना** की थी।
- उन्होंने **305 ईसा पूर्व में सेल्यूकस निकेटर को युद्ध में हराया** था।
- यूनानी राजदूत **मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र की यात्रा की थी और 'इंडिका' नामक पुस्तक लिखी** थी।
- जैन परंपरा के अनुसार, उन्होंने बाद में **जैन धर्म स्वीकार कर लिया था और श्रवणबेलगोला में अपने प्राण त्यागे** थे।

## बिंदुसार (298–273 ईसा पूर्व)

- वे चंद्रगुप्त मौर्य के पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- उन्होंने **भारत के अधिकांश हिस्सों में साम्राज्य का विस्तार** किया था।
- यूनानी स्रोतों में उन्हें **'अमित्रोकेट्स' (अमित्रघात)** कहा गया है।
- उन्होंने **यूनानी शासकों के साथ राजनयिक संबंध** बनाए रखे थे।
- उन्होंने **आजीवक संप्रदाय का समर्थन** किया था।

## अशोक (273–232 ईसा पूर्व)

- वे **सबसे महान मौर्य शासकों** में से एक थे।
- **कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व)** के बाद **उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया** था।
- उन्होंने **'धम्म' की नीति** को बढ़ावा दिया था।
- उन्होंने **250 ईसा पूर्व** में **पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति** का आयोजन किया था।
- उन्होंने **श्रीलंका और एशिया के अन्य क्षेत्रों में बौद्ध मिशन भेजे** थे।
- बिहार के **लौरिया अरेराज, लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा** में इनके शिलालेख पाए गये हैं।

## मौर्य प्रशासन

- मौर्य प्रशासन **चाणक्य के 'अर्थशास्त्र' पर आधारित** था।
- **साम्राज्य विभिन्न प्रांतों में विभाजित** था जिनका **शासन राज्यपालों द्वारा** किया जाता था।
- **प्रशासन सप्तांग सिद्धांत (राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड और मित्र)** का पालन करता था।
- महत्वपूर्ण अधिकारियों में **महामात्र, रज्जुक और गोप** शामिल थे।
- न्यायालयों को **धर्मस्थीय (दीवानी न्यायालय)** और **कंटकशोधन (फौजदारी न्यायालय)** में विभाजित किया गया था।
- **अर्थव्यवस्था कृषि, व्यापार, खनन और शिल्प पर आधारित** थी।
- लेनदेन में **पण और माषक जैसे सिक्कों** का उपयोग किया जाता था।
- प्रमुख व्यापारिक मार्ग **तक्षशिला, राजगीर, पाटलिपुत्र और ताम्रलिप्ति बंदरगाह** को जोड़ते थे।

**मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रांत:**

| प्रांत | स्थान | राजधानी |
|---|---|---|
| उत्तरी | उत्तरापथ | तक्षशिला |
| पश्चिमी | अवन्तिपथ | उज्जयिनी |
| पूर्वी | प्राच्यपथ | तोसली |
| दक्षिणी | दक्षिणपथ | सुवर्णगिरि |
| मध्य | मगध | पाटलिपुत्र |

## बिहार में मौर्योत्तर राजवंश

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, बिहार और मगध में कई राजवंशों का उदय हुआ।

### शुंग राजवंश (184–72 ईसा पूर्व)

- शुंग राजवंश की स्थापना 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या करने के बाद की थी।
- पुष्यमित्र ने मगध, कोसल, साकल, मालवा और बरार पर शासन किया था।
- वह ब्राह्मणवाद का अनुयायी था, हालांकि बौद्धों के उत्पीड़न का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है।
- इस अवधि के दौरान भरहुत और सांची के बौद्ध स्मारकों का जीर्णोद्धार किया गया था।
- उनके शासनकाल के दौरान दो अश्वमेध यज्ञ आयोजित किए गए थे।
- पुष्यमित्र की मृत्यु के बाद, उनका पुत्र अग्निमित्र राजा बना, जिसे कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' के नायक के रूप में जाना जाता है।
- इस वंश का अंतिम शासक देवभूति था, जिसकी हत्या उसके मंत्री वासुदेव ने कर दी थी, जिससे कण्व वंश का उदय हुआ।
- शुंग शासक भागभद्र के शासनकाल के दौरान यूनानी राजदूत हेलियोडोरस ने बेसनगर में गरुड़ स्तंभ स्थापित किया था।

### कण्व राजवंश (72–27 ईसा पूर्व)

- कण्व राजवंश ने मगध में शुंगों का स्थान लिया था।
- इसकी स्थापना वासुदेव कण्व ने अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या करने के बाद की थी।
- इस वंश का अंतिम शासक सुशर्मन था।
- लगभग 45 वर्षों के बाद इस राजवंश का अंत हो गया, जिसका संभावित कारण दक्कन में सातवाहनों का उदय था, हालांकि मगध पर उनके प्रत्यक्ष शासन के प्रमाण अनिश्चित हैं।

### कुषाण राजवंश

- मगध क्षेत्र में कुषाण काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- कुषाणों ने पहली शताब्दी ईस्वी के आसपास इस क्षेत्र में प्रवेश किया और बिहार के कुछ हिस्सों में अपना प्रभाव बढ़ाया था।
- कुषाणों के पतन के बाद, यह क्षेत्र **लिच्छवियों** के नियंत्रण में आ गया था।
- कुषाण काल के सिक्के **चिरांद, बक्सर, बोधगया, वैशाली और कुम्हरार** में पाए गए हैं।
- उनके पतन ने राजनीतिक अस्थिरता पैदा कर दी थी, जो **तीसरी शताब्दी ईस्वी** में **गुप्तों** के उदय तक बनी रही।

## गुप्त साम्राज्य

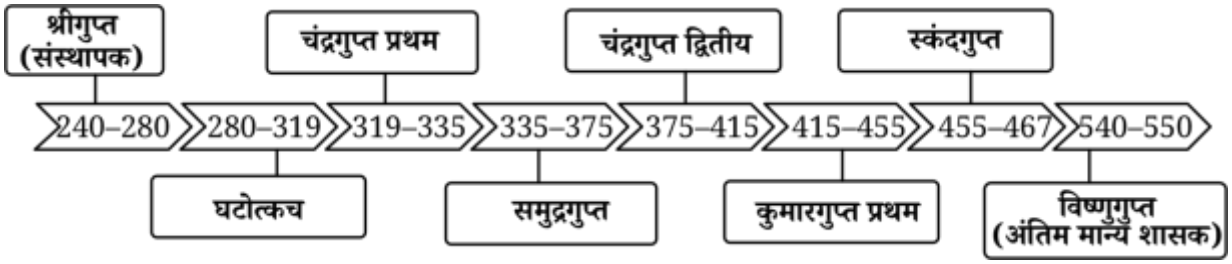


- **गुप्त राजवंश** के उदय ने प्राचीन भारत के **दूसरे महान साम्राज्य की स्थापना** को चिह्नित किया था।
- **गुप्त शासक भारत के बड़े हिस्सों को एक प्रशासन** के अधीन लाने में सफल रहे थे।
- अत्यधिक केंद्रीकृत मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था के विपरीत **गुप्त प्रशासन अधिक विकेंद्रीकृत** था।
- साम्राज्य को **प्रांतों, जिलों और गांवों में विभाजित** किया गया था, जिनमें **गांव सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई** थे।

### श्रीगुप्त

- **श्रीगुप्त (लगभग 275 ईस्वी) गुप्त राजवंश के संस्थापक** थे।
- उन्होंने **उत्तरी बंगाल और दक्षिणी बिहार** के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।

- उनके बाद उनके पुत्र **घटोत्कच (280 ईस्वी) उत्तराधिकारी** बने थे।
- ये **प्रारंभिक गुप्त शासक संभवतः कुषाणों के अधीन** थे।

## चंद्रगुप्त प्रथम

- **चंद्रगुप्त प्रथम (319–330 ईस्वी) गुप्त वंश के पहले स्वतंत्र शासक** थे और उन्होंने **'महाराजाधिराज'** की उपाधि धारण की थी।
- उन्होंने **लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी** से विवाह किया था, जिससे उनकी राजनीतिक शक्ति को काफी मजबूती मिली थी।
- उनके **साम्राज्य में बिहार, ऊपरी गंगा घाटी, उत्तर प्रदेश और बंगाल के क्षेत्र शामिल** थे।
- उनके पुत्र **समुद्रगुप्त** ने स्वयं को **'लिच्छवि-दौहित्र' (लिच्छवियों का नाती)** कहा था।

## समुद्रगुप्त

- **समुद्रगुप्त (330–380 ईस्वी)** ने सैन्य अभियानों के माध्यम से गुप्त साम्राज्य का व्यापक विस्तार किया था।
- उनकी **उपलब्धियों का वर्णन हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख)** में किया गया है।
- **इतिहासकार विंसेंट ए. स्मिथ** ने उन्हें **"भारत का नेपोलियन"** कहा था।
- वे **कला और साहित्य के संरक्षक भी थे** और उन्होंने **'कविराज' की उपाधि धारण** की थी।
- उनका **साम्राज्य हिमालय से लेकर नर्मदा नदी** तक फैला हुआ था।
- उन्होंने **पश्चिमी क्षेत्रों में शकों और कुषाणों को पराजित** किया था।

## चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) (380–415 ईस्वी)

- **चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ईस्वी)** ने समुद्रगुप्त के बाद सत्ता संभाली और साम्राज्य का और अधिक विस्तार किया था।
- उन्होंने **शकों को पराजित किया और मथुरा तथा गुजरात पर विजय प्राप्त** की थी।
- उनका शासनकाल **सांस्कृतिक समृद्धि और साहित्यिक उपलब्धियों** के लिए जाना जाता है।
- उनके दरबार में **कालिदास, वराहमिहिर, धन्वंतरि और शंकु जैसे प्रसिद्ध विद्वान (नवरत्न)** शामिल थे।
- चीनी यात्री **फाह्यान** ने **उनके शासनकाल के दौरान भारत की यात्रा** की थी।
- उन्होंने **सोने के सिक्के जारी किए और उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी** बनाया था।

## कुमारगुप्त प्रथम

- **कुमारगुप्त प्रथम (415–455 AD)** चंद्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारी बने थे।
- उन्होंने **'महेंद्रादित्य'** की **उपाधि धारण** की और एक **नए प्रकार के सोने के सिक्के जारी** किए थे।
- उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान **नालंदा विश्वविद्यालय** की **स्थापना** था।
- **नालंदा बाद में 427 से 1197 ईस्वी तक शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र** बना रहा था।

## स्कंदगुप्त

- **स्कंदगुप्त** गुप्त राजवंश के अंतिम शक्तिशाली शासक थे।
- उन्होंने **पुष्यमित्रों को हराया और 455 ईस्वी में हूणों के आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल** किया था।
- जूनागढ़ के एक शिलालेख में उनके शासनकाल के दौरान **सुदर्शन झील** की मरम्मत का उल्लेख मिलता है।
- **467 ईस्वी में उनकी मृत्यु के बाद, गुप्त साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन** होने लगा था।
- बाद के शासक जैसे **पुरुगुप्त, बुधगुप्त, नरसिंहगुप्त और विष्णुगुप्त कमजोर सिद्ध हुए** और साम्राज्य **मौखरि जैसे छोटे राज्यों में** विभाजित हो गया था।

**समयरेखा : -**

| समय | घटना |
|---|---|
| 2000-1000 ईसा पूर्व | प्रागैतिहासिक काल |
| 1000 ईसा पूर्व | वैदिक काल |
| 1000-600 ईसा पूर्व | उत्तर वैदिक काल |
| 600-500 ईसा पूर्व | 16 महाजनपदों का उदय |
| 563 ईसा पूर्व | लुंबिनी में गौतम बुद्ध का जन्म |
| 528 ईसा पूर्व | गौतम बुद्ध को बोध या ज्ञान प्राप्ति |
| 540 ईसा पूर्व | वैशाली में महावीर का जन्म |
| 500-400 ईसा पूर्व | अंग, वज्जि और लिच्छवी राज्यों का उदय |
| 544-444 ईसा पूर्व | हर्यक वंश |
| 455 ईसा पूर्व | उदयन ने पाटलिपुत्र शहर की स्थापना की |
| 412-344 ईसा पूर्व | शिशुनाग वंश |
| 344-321 ईसा पूर्व | नंद वंश |
| 321-184 ईसा पूर्व | चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना |
| 305 ईसा पूर्व | मेगस्थनीज ने भारत का दौरा किया |
| 261 ईसा पूर्व | अशोक ने कलिंग युद्ध लड़ा |
| 184-72 ईसा पूर्व | शुंग वंश |
| 72-27 ईसा पूर्व | कण्व वंश |
| 78 ईसा पूर्व - 125 ईसा पूर्व | कुषाण वंश |
| 275-467 ईस्वी | गुप्त वंश |

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# 3 अध्याय

# मध्यकालीन इतिहास

- बिहार के मध्यकालीन इतिहास को दो अलग-अलग चरणों में विभाजित किया जा सकता है: पूर्व मध्यकाल और मध्यकाल।

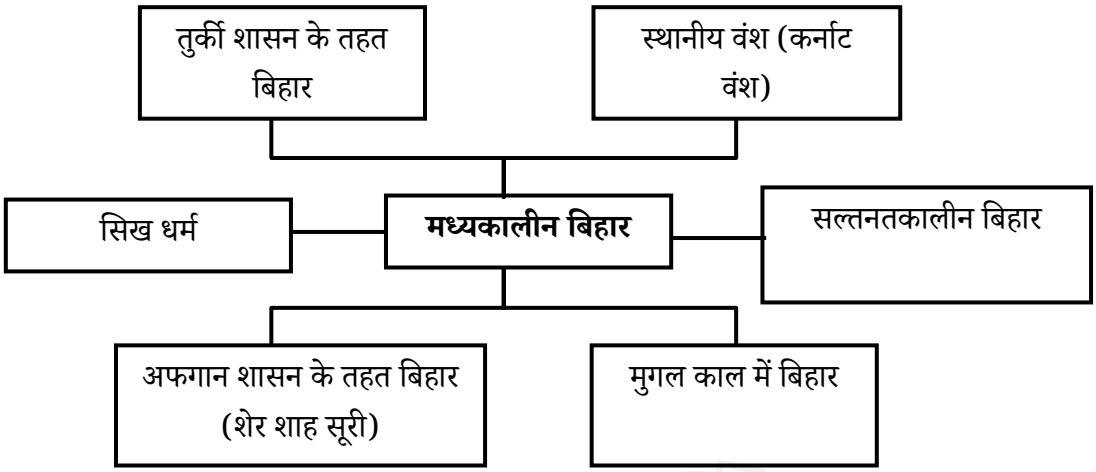


## बिहार के मध्यकालीन इतिहास के स्रोत

बिहार का मध्यकालीन इतिहास विभिन्न स्रोतों के माध्यम से प्रलेखित है, जिनमें पुरातात्विक साक्ष्य, सिक्के और शिलालेख शामिल हैं।

### पुरातात्विक साक्ष्य

पुरातात्विक खोजें बिहार के मध्यकालीन अतीत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं। इसका एक उदाहरण लखीसराय के **जयनगर** में अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के सिक्कों की खोज है, जो इस क्षेत्र में दिल्ली सल्तनत के प्रभाव को दर्शाती है।

### शिलालेख

शिलालेख सूचना के एक अन्य मूल्यवान स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, दरभंगा की जामा मस्जिद की दीवार पर पाया गया 1326 ईस्वी का एक अरबी शिलालेख, **'इक्लीम तुगलकपुर उर्फ तिरहुत'** शीर्षक के तहत इस क्षेत्र की मुद्रा ढलाई (minting) गतिविधि का उल्लेख करता है। इसके अतिरिक्त, पटना, अजीमाबाद और राजमहल में मुगल शासकों के 1580 ईस्वी के बाद के ढाले गए सिक्के मिले हैं, जो वहां मुगलों की निरंतर उपस्थिति को दर्शाते हैं।

### स्मारक:

स्मारक क्षेत्र की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थितियों को समझने में मदद करते हैं। उल्लेखनीय स्थलों में **रानी का महल** और विशिष्ट व्यक्तियों के मकबरे शामिल हैं।

**बिहार के प्रसिद्ध स्मारक स्थल:-**

| स्थल | स्थान | जिला |
|---|---|---|
| क्वींस पैलेस, इब्राहीम बायू का मकबरा | बिहार शरीफ | नालंदा |
| शाह मखदुन का मकबरा, दौलत मनेरी और इब्राहीम खान | मनेर | पटना |
| हसन शाह सूरी का मकबरा | सासाराम | रोहतास |
| शेर शाह सूरी का मकबरा | सासाराम | रोहतास |
| रोहतासगढ़ किला | रोहतासगढ़ | रोहतास |
| बख्तियार खान का मकबरा | मलिकसराय | कैमूर |
| तीन शिला लेख | सासाराम | रोहतास |

### साहित्यिक स्रोत:

मध्यकालीन इतिहास मिन्हाज-उस-सिराज, अब्बास सरवानी और गुलाम हुसैन सलीम जैसे विद्वानों के ग्रंथों में भी दर्ज है। तुर्की, अरबी और मैथिली में उनके लेखन इस क्षेत्र की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिशीलता की जानकारी प्रदान करते हैं।

## यात्रियों के विवरण

यूरोपीय यात्रियों और मुल्ला तकिया, अब्दुल लतीफ, मोहम्मद सादिक वहाबहानी जैसे मुस्लिम विद्वानों और अन्य लोगों ने बिहार के मध्यकालीन इतिहास का दस्तावेजीकरण किया था। उन्होंने क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की थी।

# बिहार में पूर्व मध्यकाल

पूर्व मध्यकाल के दौरान, 7वीं शताब्दी के मध्य से 11वीं शताब्दी के शुरुआती भाग तक पाल वंश एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा था। पाल वंश के पतन के बाद, सेन और कर्नाट राजवंश प्रमुखता में आए थे।

## पाल राजवंश (750-1150 ईस्वी)

बंगाल और बिहार के क्षेत्रों में अस्थिरता के समय, शशांक की मृत्यु के बाद पाल राजवंश सत्ता में आया था। पाल महायान और तांत्रिक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। **गोपाल** (750-770 ईस्वी) पाल वंश के पहले शासक और संस्थापक थे।

**पाल राजवंश के प्रमुख शासक:**

### गोपाल

- पूर्वी भारत में शासकों के पतन के बाद, 'मत्स्य-न्याय' (मछली का कानून) की स्थिति से बचने के लिए गोपाल सिंहासन पर बैठे थे।
- 750 ई. में, उन्हें **लोकतांत्रिक** सिद्धांत के आधार पर राजा चुना गया था, जैसा कि खालिमपुर ताम्रपत्र शिलालेख से संकेत मिलता है। इस घटना को दक्षिण एशिया के पहले लोकतांत्रिक चुनावों में से एक माना जाता है।
- गोपाल ने **अपने** शासन के तहत बंगाल और बिहार को संगठित करके अपने क्षेत्र का विस्तार किया और **ओदंतपुरी** (अब बिहार शरीफ) में एक बौद्ध मठ और विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।

### धर्मपाल (770 से 810 ई.):

- गोपाल के बाद 770 ईस्वी में धर्मपाल सिंहासन पर बैठे। उनके शासनकाल ने पाल साम्राज्य के विस्तार को चिह्नित किया।
- उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भागों पर नियंत्रण का विस्तार किया और **कन्नौज** में सफल सैन्य अभियान चलाए, जिससे उन्हें **'उत्तरापथस्वामिन'** की उपाधि मिली और उन्होंने कन्नौज में एक नई राजधानी स्थापित की।
- धर्मपाल एक कट्टर बौद्ध भी थे और उन्होंने बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें भागलपुर के पास अंतिचक में **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** की स्थापना शामिल है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने **नालंदा विश्वविद्यालय** के रखरखाव में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

### देवपाल (810–850 ईस्वी)

- देवपाल धर्मपाल के उत्तराधिकारी बने और उन्होंने पूरे दक्षिण एशिया में पाल साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने **मुंगेर** को अपनी **राजधानी** बनाया और अपने साम्राज्य का विस्तार **उत्कल और प्राग्ज्योतिष** (असम) तक किया। उनके शासनकाल को निम्नलिखित द्वारा चिह्नित किया गया है:
  - ✓ **घोरावन, हिलसा, नालंदा और मुंगेर** में पाए गए शिलालेख।
  - ✓ हिंदू धर्म को संरक्षण और मंदिरों के निर्माण तथा शैक्षिक उद्देश्यों के लिए दिया गया दान।
  - ✓ **दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन** के साथ घनिष्ठ संबंध।
  - ✓ उनके समय के दौरान **बालपुत्रदेव द्वारा नालंदा में एक बौद्ध मठ की स्थापना**।

### महिपाल प्रथम

- महिपाल प्रथम 988 ईस्वी में सिंहासन पर बैठे और उन्हें पाल वंश का दूसरा संस्थापक माना जाता था।
- उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार किया, विशेष रूप से **बिहार और बंगाल में और साथ ही चोल वंश** के साथ उनके महत्वपूर्ण संपर्क रहे।
- महिपाल प्रथम ने 1023 ईस्वी में **राजेंद्र चोल प्रथम** से युद्ध किया और हार गए। उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई, जिसने पाल साम्राज्य के पतन को चिह्नित किया।

### बाद के पाल शासक

पाल वंश के बाद के शासक **विग्रहपाल** (देवपाल के पुत्र), **नारायणपाल, राज्यपाल, गोपाल द्वितीय** और **महिपाल प्रथम** थे। इनमें महिपाल प्रथम सबसे महत्वपूर्ण थे।

- **विग्रहपाल और महिपाल द्वितीय** उल्लेखनीय शासक थे, लेकिन महिपाल प्रथम को **कैवर्त** (संध्याकर) के विद्रोह का सामना करना पड़ा, जिसे महिपाल की सेना द्वारा कुचल दिया गया था।
- **रामपाल पाल वंश** के अंतिम शासक थे।

## सेन वंश

पाल वंश के पतन के बाद, 11वीं शताब्दी के मध्य के आसपास **सेन वंश** का उदय हुआ।

- **सामंतसेन ने इस वंश की स्थापना** की और उनके बाद **विजयसेन उत्तराधिकारी** बने।
- विजयसेन के पुत्र **बल्लाल सेन** राजा बने और उन्होंने सफलतापूर्वक राज्य की रक्षा की।
- बल्लाल सेन ने **'कुलीन' प्रथा** की भी शुरुआत की, जो जन्म और रक्त की शुद्धता के सिद्धांत पर आधारित एक सामाजिक आंदोलन था।
- आंतरिक विद्रोहों और **बख्तियार खिलजी** के आक्रमण के कारण सेन वंश कमजोर हो गया।
- अंतिम महत्वपूर्ण शासक **लक्ष्मणसेन** थे, जिन्होंने अपनी हार के **बाद पूर्वी बंगाल के विक्रमपुर** में शरण ली थी।

### कर्नाट वंश (1097–1324 ई.)

**कर्नाट वंश** की स्थापना **मिथिला में नान्यदेव द्वारा** की गई थी। अपनी मजबूत योद्धा विरासत के लिए प्रसिद्ध, नान्यदेव संगीत के भी एक महान संरक्षक थे, जिन्होंने विभिन्न रागों का विश्लेषण किया और एक शोधग्रंथ की रचना की। प्रारंभ में इसकी राजधानी **चंपारण में सिमराव** थी, जिसे बाद में **कमलथाड़ी स्थान (वर्तमान मधुबनी जिले में कमलाथानी)** में स्थानांतरित कर दिया गया।

### प्रमुख शासक:

- **गंगा सिंह देव:** एक कुशल प्रशासक और नान्यदेव के पुत्र, उनका तिरहुत और दरभंगा पर अधिकार था।
- **हरिसिंह देव:** कर्नाट वंश के अंतिम शासक, जो कला और साहित्य के महान संरक्षक थे। उनके दरबार में प्रसिद्ध रचना 'वर्णरत्नाकर' के लेखक **ज्योतिरीश्वर** का उदय हुआ।
- कर्नाट वंश के शासनकाल को मिथिला का **स्वर्ण काल** कहा जाता था।
- **हरिसिंह देव 'पंजी व्यवस्था'** और **'पंजी प्रबंध'** प्रणालियों को लागू करने में भी सहायक रहे थे।
- उनके पतन के बाद, हरिसिंह देव के नेपाल भाग जाने के कारण **गयासुद्दीन तुगलक** द्वारा कर्नाट वंश को उखाड़ फेंका गया और इस वंश के बाद **ओइनवार वंश** का शासन स्थापित हुआ।

## बिहार में मध्यकाल

बिहार में मध्यकाल पश्चिम से तुर्की आक्रमण द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसने इस क्षेत्र की राजनीतिक और सामाजिक संरचना को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

## बिहार में तुर्की आक्रमण:

- गोरी ने **नालंदा विश्वविद्यालय** सहित **बौद्ध मठों** को नष्ट कर दिया और कई निर्दोष लोगों की हत्या कर दी। इसने बिहार में इस्लामी आक्रमणों के शुरुआती प्रभाव को चिह्नित किया।
- **मुहम्मद बख्तियार खिलजी** ने **ओदंतपुरी** शहर पर हमला किया, जो **सेन वंश** द्वारा स्थापित एक बौद्ध केंद्र था, जिससे मठों का व्यापक विनाश हुआ और **विहारों** का पतन हो गया।
- **बख्तियार खिलजी** ने **1198 ईस्वी** में बिहार पर कब्जा कर लिया और **उत्तरी बिहार** का अधिकांश हिस्सा **कर्नाट** और अन्य स्थानीय राजवंशों के अधीन आ गया।
- बख्तियार खिलजी ने अपने साम्राज्य का विस्तार **बंगाल और असम** तक किया, बाद में **बिहार शरीफ** में उनकी मृत्यु हो गई। उनका मकबरा **बिहार शरीफ** में स्थित है।
- **दिल्ली** से हुए तुर्की आक्रमणों के कारण बिहार विभिन्न शासकों के नियंत्रण में चला गया और अंततः यह **दिल्ली सल्तनत** का हिस्सा बन गया।

### बिहार और गुलाम वंश

- दिल्ली में **गुलाम वंश** की स्थापना के बाद बिहार की स्थिति के सीमित प्रमाण मिलते हैं। **अली मर्दान** और **हसमुद्दीन इवाज** खिलजी ने महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई, जिसमें इवाज खिलजी ने **लखनौती** (जो अब **बिहार** का हिस्सा है) में स्वतंत्र शासन स्थापित किया।